मिरर

तारे ज़मीं पर...

"देखो देखो क्या वो पेड़ है
चादर ओढ़े या खड़ा कोई
बारिश है या आसमान में
छोड़ दिए हैं नल खुले कहीं
खुल के सोचें आओ
पंख ज़रा फैलाओ
रंग नए बिखराओ
चलो चलो चलो चलो नए ख्वाब बुन लें....."

tAAre zameeN Par

यह मज़ेदार कविता है आमिर खान की नई फिल्म *तारे ज़मीं पर* से। अब आमिर खान को तो तुम सब जानते ही हो। अरे वही *लगान* के भुवन या *रंग दे बसन्ती* के डी.जे. या लम्बे-लम्बे बालों वाला मंगल पाण्डे। वे एक निर्देशक के रूप में अपनी पहली फिल्म लेकर आए हैं – *तारे ज़मीं पर*। फिल्म एक बच्चे के बारे में है – उसकी दुनिया के बारे में, उसके दोस्तों के बारे में, उसके ख्वाबों के बारे में। आमिर फिल्म में निर्देशन के अलावा अदाकारी भी कर रहे हैं। फिल्म में वे एक टीचर का किरदार निभा रहे हैं। आमिर मशहूर हैं अपनी हर फिल्म में किरदार के अनुरूप नया हेयर स्टाइल बनवाने को लेकर।

तारे ज़मीं पर के गीतकार प्रसून जोशी इससे पहले *रंग दे बसन्ती* से बड़ा नाम कमा चुके हैं। उनकी मशहूरी एक "एड गुरू" के रूप में भी खूब है। प्रसून के गीत एकदम ऐसे हैं जैसे सीधे तुम्हारी मनपसन्द कविता की किताब से चुरा लिए हों! और सभी में वही बदमाशी है जो तुम्हें और मुझे पसन्द आती है। ऐसा ही एक बदमाश-सा, आँखें मलता गाना है "जमे रहो..."। इसमें एक तरफ एक हरदम तैयार, आज्ञाकारी बच्चे की दुनिया है और दूसरी तरफ एक शैतान लेकिन मज़ेदार दुनिया का नज़ारा है। सुनो...

"यहाँ अलग अन्दाज़ है
जैसे छिड़ता कोई साज़ है
हर काम को टाला करते हैं
ये सपने पाला करते हैं...
तितली से मिलने जाते हैं
ये पेड़ों से बतियाते हैं
ये हवा बटोरा करते हैं
बारिश की बूँदें पढ़ते हैं।"

अब बताओ तुम्हारी दुनिया की तस्वीर इनमें से किससे ज़्यादा मिलती है? मैं अपने मन की कहूँ तो मेरा बचपन तो इन्हीं के बीच कहीं है। हाँ, थोड़ा-सा दूसरी तस्वीर की तरफ झुका।

तारे ज़मीं पर का संगीत शंकर-एहसान-लॉए का है। हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक शास्त्रीय संगीत के साथ पश्चिमी रॉक का संगम कर इन्होंने फिल्म संगीत को एक नया आयाम दिया है। शंकर महादेवन खुद एक गायक हैं और एहसान नूरानी तथा लॉए मैंडोसा वेस्टर्न रॉक के माहिर। ए. आर. रहमान के साथ आई यह नई धारा आज हर उम्र के लोगों की पसन्द बन चुकी है। आखिर "कजरारे-कजरारे" की धुन को कौन भूल सकता है!

तुम अगर इन्टरनेट के जाल से जुड़े हो तो फिल्म की वेबसाईट www.taarezameenpar.com देख सकते हो। और खुद आमिर खान से उनके ब्लॉग www.aamirkhan.com पर बात कर सकते हो।

तो बताना कि कैसे लगे ये गाने?

मुलाकात खेलों की दुनिया के तीन सितारों से...

सायना नेहवाल

सायना हमारे देश की बैडमिंटन स्टार हैं। इत्तेफाक से वे भी सानिया के शहर हैदराबाद की हैं। हालांकि सायना के माता-पिता हरियाणा मूल के हैं। और दोनों उस प्रान्त के बैडमिंटन चैम्पियन रह चुके हैं।

सत्रह साल की सायना अन्तर्राष्ट्रीय चार सितारा प्रतियोगिता जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी हैं। 2006 में उन्होंने फिलिपीन्स ओपन जीता। इसी साल वे विश्व जूनियर बैडमिंटन प्रतियोगिता के फाईनल में पहुँचीं। छोटे कद की सायना प्रतिद्वन्द्वियों के बीच अपनी तेज़ रफ्तार और शक्तिशाली प्रहार के लिए जानी जाती हैं। एक साल पहले भारतीय राष्ट्रीय प्रतियोगिता जीतने के बाद उनका शुमार दुनिया की सर्वश्रेष्ठ 22 बैडमिंटन खिलाड़ियों में हुआ।

डोला बैनर्जी

आज तीरन्दाज़ी की विश्व चैम्पियन हैं डोला बनर्जी। 2007 के विश्व कप फाइनल में उन्होंने एकल महिला प्रतियोगिता का स्वर्ण पदक जीता था। यह कारनामा करने वाली वे पहली भारतीय तीरन्दाज़ हैं। कोलकाता में रहने वाली 27 वर्षीय डोला ने 2005 में पहली बार इतिहास रचा था। इसमें उन्होंने 18वीं स्वर्ण तीर ग्रॉं प्री प्रतियोगिता जीती। इसी वर्ष उन्हें अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 2006 में भी उन्होंने सैफ खेलों का महिला एकल तीरन्दाज़ी का स्वर्ण पदक जीता था। आने वाले बीजिंग ऑलम्पिक में वे शायद फिर इस पदक पर कब्ज़ा कर लें। आमीन!

जोश्ना चिन्नप्पा

स्क्वैश की दुनिया में भी हमारी एक स्टार बड़ा नाम कमा रही है। हम जोश्ना चिन्नप्पा की बात कर रहे हैं। चेन्नई की 21 वर्षीय जोश्ना फिलहाल दुनिया के सर्वश्रेष्ठ 45 खिलाड़ियों में शामिल हैं। पाँच साल पहले जब वे जूनियर खिलाड़ी थीं, उन्होंने स्क्वैश की दुनिया में हलचल मचा दी थी। उस वक्त वे 17 साल से कम उम्र की सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाड़ी थीं। ब्रिटेन और एशियाई जूनियर प्रतियोगिताओं का खिताब जीतने के अलावा वे भारत की जूनियर और सीनियर स्क्वैश चैम्पियन भी थीं।